हिमाचल अभी अभी

नई सोच नई खोज

साप्ताहिक

/himachal.abhiabhi @himachal_abhi

1 रुपए का सिक्का ...

-पढ़ें पेज 2 पर

RNI No. HPHIN/2015/68432 वर्ष 5 अंक 36 धर्मशाला। शनिवार, 23 मई-29 मई, 2020 www.himachalabhiabhi.com तदनुसार 10 ज्येष्ठ, विक्रमी संवत् 2077 कुल पृष्ठ 12 मूल्य ₹5 | Postal Regn.No. DGPUR/26/15-17

भाव के भूखे भगवान

अक्सर आपने देखा होगा कि लोग मंदिर में सिक्का या नोट भगवान के सामने दान पेटी में डालते हैं और फिर हाथ जोड़कर भगवान से मनोकामना मांगते हैं। यह मूर्खता के सिवा और कुछ नहीं। जब इस तरह का व्यवहार हमें पसंद नहीं तो भगवान के सामने ऐसा व्यवहार क्यों। वे आपके पैसे, धन-दौलत के भूखे नहीं है। उन्हें आपकी भावनाएं और सच्ची भक्ति चाहिए न कि पैसे। हां मंदिर में दान करना, भूखों को देना आदि ये अलग बात है।

लोगों को लगता है कि भगवान उनके दिए रुपयों से खुश होगा। इसके चलते लोगों भगवान को भी तरह-तरह का प्रलोभन देने का प्रयास करते हैं। आज लोग सोने-चांदी के बर्तनों में भगवान को प्रसाद लगाते हैं, छप्पन भोग के कार्यक्रम होते हैं, और ढेर सारे आडंबर करते हैं। यह कभी नहीं भूलना चाहिए। भगवान को अपनी सच्ची श्रद्धा, आस्था और प्रेम के पुष्प अर्पित करना चाहिए। दिखावे, ढोंग व आडंबर से बचना चाहिए, क्योंकि भगवान को धन नहीं चाहिए। वे तो खुद ही लक्ष्मी पति हैं। उन्हें अन्न नहीं चाहिए, क्योंकि उसे तो वही उपजाते हैं। उन्हें आपसे वस्त्र नहीं चाहिए, क्योंकि आपके पास जो है, वह सब उन्हीं का दिया हुआ है। ईश्वर न काठ में रहता है, न पत्थर में, न मिट्टी की मूर्ति में, वह तो भावों में निवास करता है।